हक्कू पत्र

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में प्रधानमंत्री द्वारा उत्तरी कर्नाटक के पांच जिलों में घुमंतू लंबानी (बंजारा) जनजाति के लगभग 5000 लाभार्थियों को हक्कू पत्र वितरित किया गया।

हक्कू पत्र क्या है?

- 'हक्कू' शब्द का अर्थ है "सही", और 'पत्र' का अर्थ है "कागज" या "दस्तावेज़"। यह एक कानूनी दस्तावेज है जो किसी व्यक्ति की संपत्ति का उत्तराधिकार बताता है।
- जिस जमीन पर हक्कू पत्र जारी किया जाता है, वह सरकारी स्वामित्व वाली होती है, जिसे कुछ शर्तों के साथ जारी किया जाता है।
- यह अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, शहरी झुग्गी बस्तियों, विकलांगों और देश के अन्य वंचित वर्गों को जारी किया जाता है।

हक्कू पत्र वितरण अभियान:

- यह कर्नाटक की अम्बेडकर ग्रामीण आवास योजना का एक हिस्सा है।
- इसके तहत सरकार हक्कू पत्र की जमीन का लाभार्थी के नाम पर नि:शुल्क पंजीकरण कराने की पेशकश करती है।
- हक्कू पत्र की भूमि पर बने किसी भी घर का उपयोग लाभार्थी के आवास के रूप में किया जाना चाहिए, न कि किराये के उद्देश्यों के लिए।

हक्कू पत्र के लाभ:

- यह जमीन के मालिकाना आधिकारिक रिकॉर्ड देकर ,जमीन या संपत्ति का वैध मालिक बनाता है।
- यह एक राज्य-गारंटी वाला दस्तावेज़ है।
- शीर्षक विलेख मालिकों को उक्त दस्तावेज़ के साथ बैंक ऋण प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।
- हक्कू पत्र पंजीकरण भूमि के स्वामित्व या अधिकारों के संबंध में सभी प्रकार के विवादों का समाधान करता है।
- दस्तावेज़ सीमाओं पर अतिचार के माध्यम से किसी भी अतिक्रमण को रोकने में मदद करता है।

स्रोत- पी.एम. इंडिया

चामुंडी हिल्स

चर्चा में क्यों ?

- चामुंडी हिल्स और उसके पर्यावरण को बचाने के लिए एक नागरिक समिति ने तीर्थयात्रा कायाकल्प एवं आध्यात्मिक विरासत संवर्धन अभियान (प्रसाद) के तहत पहाड़ी की चोटी पर विकास कार्यों के कार्यान्वयन से पहले विरासत समिति से मंजूरी के लिए दबाव डालने का संकल्प लिया है।

चामुंडी हिल्स के बारे में:

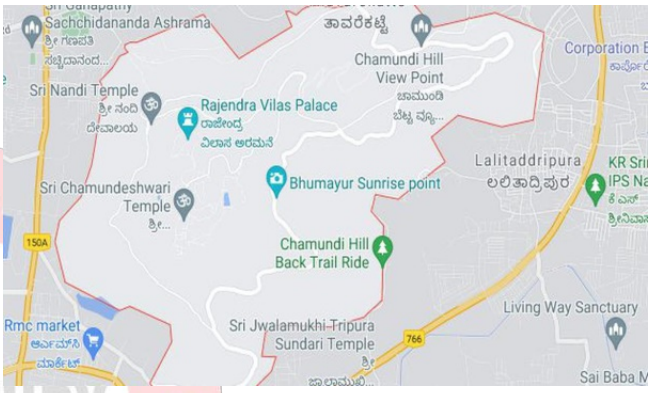

- यह कर्नाटक के मैसूर शहर के दक्षिण में स्थित यह पहाड़ी मैसूर के प्रमुख पर्यटन स्थलों में गिनी जाती है।
- पहाड़ी की चोटी पर महिषासुरमर्दनी भगवती चामुंडा का 'चामुंडेश्वरी मंदिर' है। चामुंडी पहाड़ी पर महिषासुर की एक ऊंची मूर्ति है ।
- इसकी औसत ऊंचाई 1,060 मीटर है।
- इन पहाड़ियों का उल्लेख प्राचीन हिंदू ग्रंथों जैसे 'स्कंद पुराण' में किया गया है।

श्री चामुंडेश्वरी मंदिर:

- चामुंडेश्वरी मंदिर का निर्माण 12वीं शताब्दी में किया गया था। यह मंदिर देवी दुर्गा की राक्षस महिषासुर पर विजय का प्रतीक है।
- मंदिर के मुख्य गर्भगृह में स्थापित देवी की मूर्ति शुद्ध सोने की बनी है।
- यह मंदिर द्रविड़ वास्तुकला का एक बहुत ही अच्छा उदाहरण है।
- चामुंडेश्वरी मंदिर की इमारत 7 मंजिला है।
- मुख्य मंदिर के पीछे महाबलेश्वर को समर्पित एक छोटा-सा मंदिर भी है, जो लगभग एक हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है।
- चामुंडी पहाड़ी के रास्ते में काले ग्रेनाइट के पत्थर से बने भगवान शिव के सेवक नंदी के भी दर्शन होते हैं।
- यह मैसूर शाही परिवार की देवी चामुंडेश्वरी (चामुंडी) को समर्पित है।

प्रसाद योजना

- भारत सरकार ने **पर्यटन मंत्रालय** के तहत वर्ष **2014-2015 में प्रसाद योजना** की शुरुआत की थी।
- यह भारत सरकार द्वारा पूर्ण वित्तीय सहायता के साथ एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है।

210, Virat Bhawan, 2nd Floor Near Post Office, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Contact Us 9999516388, 8595638669

- इसका उद्देश्य संपूर्ण धार्मिक पर्यटन अनुभव प्रदान करने के लिए तीर्थ स्थलों को प्राथमिकता, नियोजित और टिकाऊ तरीके से एकीकृत करना है। घरेलू पर्यटन का विकास काफी हद तक तीर्थ पर्यटन पर निर्भर करता है।

स्रोत- द हिन्दू

टाइटेनोसॉर

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में भारतीय शोधकर्त्ताओं के एक समूह ने नर्मदा घाटी से 256 नए खोजे गए जीवाश्म डायनासोर के अंडों (एक अंडे के भीतर एक अंडा) का दुर्लभ मामला पाया है ।

- **टाइटनोसॉरस** – ये पृथ्वी पर विचरण करने वाले सबसे बड़े डायनासोरों में से एक थे।
- खोज से पता चलता है कि टाइटेनोसॉरस ने आधुनिक समय के पक्षियों के लिए एक उल्लेखनीय प्रजनन गुण प्रदर्शित किया।
- जीवाश्मित अंडे प्रजनन जीव विज्ञान, घोंसले के शिकार व्यवहार और माता-पिता की देखभाल पर जानकारी प्रदान करते हैं।
- दस्तावेज़ के अनुसार, यह क्षेत्र ऊपरी नर्मदा घाटी (मध्य भारत) में जबलपुर में सबसे पूर्वी लेमेट्टा और निचली नर्मदा घाटी (पश्चिमी मध्य भारत) के पश्चिम में बालासिनोर के बीच पड़ता है।
- लेमेट्टा एक्सपोजर एक तलछटी चट्टान है जो अपने डायनासोर जीवाश्मों के लिए जाना जाता है। ये तलछटी चट्टानें ज्यादातर नर्मदा घाटी के किनारे पायी जाती हैं।
- अंडे छह प्रजातियों के थे, जो भारत में इन विलुप्त प्राणियों की उच्च विविधता को दर्शाते हैं। इसके अलावा, टाइटेनोसॉरस ने अपने अंडे उथले गड्ढों में दफन कर दिए, जैसाकि आधुनिक समय के मगरमच्छों में देखा जाता है।
- यहाँ के जीवाश्म रिकॉर्ड काफी हद तक डेक्कन ज्वालामुखीय प्रवाह से छिपे हुए हैं।

टाइटनोसॉर के बारे में

- यह सरूपोड समूह से संबंधित है।
- यह एक लंबी गर्दन और एक विशाल पूंछ वाली पौधा खाने वाली छिपकली है।
- हाल ही में खोजा गया 20 मीटर निन्जातितन ज़पाटा अब तक खोजा जाने वाला सबसे पुराना टाइटनोसॉर हो सकता है।

- महिला एपेटोसॉरस (एक लंबी गर्दन वाली प्रजातियां, जो इस खोज से संबंधित टाइटनोसॉरस की तरह भारत में नहीं रहती हैं) एक घोंसले में पैदा होती है।
- यह 2014 में दक्षिण-पश्चिम अर्जेंटीना के न्यूक्वेन प्रांत में पाया गया था।
- यह लगभग 140 मिलियन वर्ष पहले क्रिटेशियस अवधि के प्रारंभिक चरण से सम्बंधित है।

स्रोत- डाउन टू अर्थ

अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC)

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में, पोर्ट, शिपिंग और जलमार्ग मंत्रालय ने इंडिया पोर्ट्स ग्लोबल लिमिटेड के सहयोग से मुंबई में 'चाबहार पोर्ट को INSTC से जोड़ने' पर एक कार्यशाला आयोजित की।

अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर के बारे में :

- यह सदस्य राज्यों के बीच परिवहन सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ईरान, रूस और भारत द्वारा मई, 2002 में हस्ताक्षर किए गए।
- समझौते को 13 देशों अर्थात् अजरबैजान, बेलारूस, बुल्गारिया, आर्मेनिया, भारत, ईरान, कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ओमान, रूस, ताजिकिस्तान, तुर्की और यूक्रेन द्वारा अनुमोदित किया गया है।
- यह हिंद महासागर को कैस्पियन सागर से फारस की खाड़ी के माध्यम से रूस और उत्तरी यूरोप से जोड़ता है।

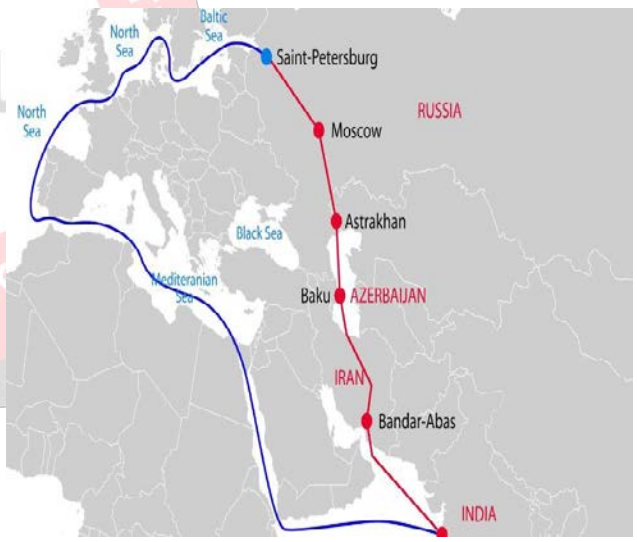

- गलियारे में समुद्र, सड़क और रेल मार्ग शामिल हैं।
- कॉरिडोर के पूरी तरह से कार्यशील हो जाने के बाद, पारगमन समय लगभग आधा हो जाने की उम्मीद है।
- फेडरेशन ऑफ फ्रेट फॉरवार्डर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के सर्वे में बताया गया है कि मौजूदा मार्ग के मुकाबले INSTC 30 प्रतिशत सस्ता और 40 प्रतिशत छोटा मार्ग होगा।

चाबहार बंदरगाह के बारे में:

- यह ओमान की खाड़ी का तट दक्षिण-पूर्वी ईरान के चाबहार में स्थित है। यह ईरान के एकमात्र समुद्री बंदरगाह के रूप में कार्य करता है, और इसमें दो अलग-अलग बंदरगाह शामिल हैं, इसका वास्तविक नाम शहीद कलंतरी और शहीद बहश्ती है।

स्रोत- पीआईबी

'निकाह-हलाला'

चर्चा में क्यों ?

- हाल ही में सुप्रीम कोर्ट के अनुसार मुस्लिमों में बहुविवाह और निकाह हलाला प्रथा की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई के लिए पांच न्यायाधीशों की संविधान पीठ का गठन किया जायेगा।

निकाह- हलाला के बारे में:

- "निकाह" और "हलाला" शब्द दोनों अरबी शब्द हैं।
- "निकाह" का अर्थ है विवाह और "हलाला" का अर्थ है किसी चीज़ को हलाल या अनुमति योग्य बनाना।
- निकाह- हलाला एक प्रक्रिया है जिसके तहत अगर किसी ने अपनी पत्नी को तीन बार तीन तलाक दे दिया तो आप उससे तब तक दोबारा शादी नहीं कर सकते जब तक वो एक बार फिर किसी और से शादी न कर ले। साथ ही वह अपने दूसरे पति के साथ शारीरिक संबंध भी बनाती है।
- मुस्लिम कानून के अनुसार, एक आदमी अपनी पत्नी को तलाक देने के बाद दोबारा शादी नहीं कर सकता, जब तक पत्नी किसी दूसरे आदमी से शादी करके अपने दूसरे पति से तलाक नहीं लेती है या दूसरे पति की मृत्यु के बाद भी ऐसा हो सकता है।
- पवित्र कुरान में ऐसी शादियों की कोई इजाज़त नहीं है।

भारत में निकाह हलाला की वैधता:

- सुप्रीम कोर्ट द्वारा ट्रिपल तालक को अमान्य करने के बाद पारित मुस्लिम महिला (विवाह पर अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 2019, निकाह हलाला पर मौन है।
- अधिनियम ने तत्काल तीन तलाक को एक आपराधिक अपराध बना दिया लेकिन हलाला से दूर रखा जो तीन तलाक के परिणामस्वरूप होता है।

स्रोत- द हिन्दू

210, Virat Bhawan, 2nd Floor Near Post Office, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09
Contact Us 9999516388, 8595638669